ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
राष्ट्रीय आर्यनिर्मात्री सभा

तिथि–10 जनवरी 2017
सृष्टि संवत्- 1, 96, 08, 53, 117
युगाब्द-5117, अंक-81, वर्ष-9
माघ मास, विक्रमी २०७३ (जनवरी 2017)
मुख्य संपादक : हनुमत्प्रसाद 'अथर्ववेदाचार्य'
कार्यकारी संपादक : आचार्य सतीश
सम्पर्क सूत्रः 9350945482
Web: www.aryanirmatrisabha.com
E-mail : krinvantovishwaryam@gmail.com

ऋषि दयानन्द

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

(राष्ट्रीय आर्यनिर्मात्री सभा का मासिक विचार पत्र)

सनेमि सख्यं स्वपस्यमानः। सूनुर्दाधार शवसा सुदंसाः। ग्रामासु चिद्दधिषे पक्वमन्तः पयः कृष्णासु रुशद्रोहिणीषु॥
–ऋ० १।११।६२।९

व्याख्यान– जो (स्वपस्यमानः) उत्तम कर्मों को करते हुए के समान (सुदंसाः) उत्तम कर्म्मयुक्त (रुशत्) शुभ गुणों की प्राप्ति करता हुआ तू जैसे (सूनुः) सत्पुत्र अपने माता-पिता का पोषण करते हुए के समान रात्रि दिन (सनेमि) प्राचीन (सख्यम्) मित्रपन के कालावयवों को (दाधार) धारण करता और (रोहिणीषु) उत्पन्नशील (कृष्णासु) सब प्रकार से पकी हुई (चित्) और (आमासु) कच्ची ओषधियों के (अतः) मध्य में (पयः) रस को धारण करता है वैसे (शवसा) बल के साथ गृहाश्रम को (दधिषे) धारण कर।

सम्पादकीय

''चरैवेति-चरैवेति-चरैवेति''

इस शब्द से कौन आर्य/आर्या परिचित नहीं होंगे? अर्थात् यह सभी का सुपरिचित शब्द है और जब भी हम राष्ट्रचिन्तन करते हैं, यह शब्द उस चिन्तन के प्रारम्भ में ही होता है। 'चर गति भक्षणयोः' से इसका अर्थ निष्पन्न होता है। गति शब्द के तीन अर्थ होते हैं- ज्ञान, गमन, प्राप्ति अर्थात् ज्ञानशील बने रहिये, गमनशील बने रहिये और प्राप्तिशील बने रहिये। और दूसरा अर्थ है- भोजन करते रहिये। अर्थात् इसे कुछ इस प्रकार समझने का प्रयास करें- जो ज्ञानशील है- विद्या की वृद्धि में लगा रहता है, जो गमनशील है- परिश्रम में आलस्य नहीं करता, जो प्राप्तिशील है- कमाता है, वही भोजन का अधिकारी है। पुनः देखें तो कुछ ऐसी पंक्ति बनेगी कि जो ज्ञान अर्जन न करता हो, जितना पढ़ लिया या न पढ़ पाया उसी में संतुष्ट हो, जो आलसी-प्रमादी होकर भाग्य के भरोसे निश्चल होकर गमनागमन रहित हो, जो कुछ प्राप्त ही न करता हो, कमाता ही न हो, उसे भोजन का अधिकार नहीं है। परन्तु जितना आवश्यक भोजन है, उतना ही आवश्यक है ज्ञानशील, गमनशील और प्राप्तिशील बने रहना।

आर्यों! आर्याओं! कुछ समय पूर्व हमारे मासिक पत्र ''कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'' का प्रकाशन रोक दिया गया था, जिसमें पत्रिका का यथास्थान, यथासमय न पहुँच पाना मुख्य कारण था, जिससे कतिपय लोगों की प्रतिक्रिया थी – 'पत्रिका बंद हो गयी', कर्म शिथिल हो गया आदि-आदि। पुनरपि अब इसे आधुनिक वैद्युत संचार माध्यमों के द्वारा वैद्युत पत्र (e-magazine) के रूप में पाठकों तक पहुँचाया जायेगा।

किन्तु यह उन्हीं लोगों को लगा या लगता है जो उपरोक्त ज्ञान-गमन-प्राप्ति से विमुख या कुछ विमुख-कुछ सम्मुख रहते हैं, कुछ समय तक प्रबल आशावादी और कुछ समय में ही प्रबल निराशा के भवंर में गोते खाने लगते हैं और प्रयत्न-पुरुषार्थ छोड़कर कार्य में ही दोष खोजने लगते हैं। जबकि अन्य कर्मशील आर्य सज्जन निरन्तर प्रयत्न पूर्वक कार्य करते रहते हैं, उन्हें नकारात्मक विचार का समय ही नहीं मिलता अपितु यह भी कहा जा सकता है कि उनके तो कार्य ही पूरे नहीं होते, क्योंकि जितने पूरे हो गये उससे कहीं अधिक सम्मुख पुनः उपस्थित हो जाते हैं, और समय कब निकल गया पता ही नहीं चलता।

आर्यों! आर्याओं! हम सभी अपने छोटे से जीवन काल में छोटे-छोटे कार्यक्लापों में अत्याधिक व्यस्त हैं, हमारे सामने ही समाज की एक-एक व्यवस्था ढह रही है, एक-एक परम्परा नष्ट की जा रही है, किन्तु अभी भी हम उन्हें बचाने में समर्थ नहीं हो पा रहे हैं, अपितु असहाय ही अनुभव कर रहे हैं। इस तथाकथित 'दिसम्बर' मास में हमारे दो महान बलिदानी 'पं. रामप्रसाद बिस्मिल' और स्वामी श्रद्धानन्द के बलिदान दिवस बीत गये, किन्तु विचारिये कितने बालक/बालिकाएं इनके विषय में जान पाये, अथवा कितनों को हम जना पाये? जबकि इन्हीं दिनों में हमारे अपने बच्चों को हमारे अपने लोगों ने अपने ही विद्यालयों (स्कूलों) में 'सेंटाक्लाज' बना डाला, हम देखते रह गये! जिन्होंने पिछले वर्षों तक नहीं बनाया था; कुछ भय, शंका, लज्जा शेष थी, उनमें से सैकड़ों ने उस भय, शंका, लज्जा को इस वर्ष तिलांजलि दे

शेष अगले पृष्ठ पर

संपादकीय का शेष...

दी। जो इस वर्ष भी भय, शंका, लज्जा के वशीभूत रहे, वे अगले कुछ वर्षों में इसे निश्चित ही छोड़ बैठेंगे यदि हमने ''चरैवेति-चरैवेति-चरैवेति'' की परिभाषा को-व्याख्या को चरितार्थ न किया, हममें से प्रत्येक आर्य/आर्या अगले वर्ष दिसम्बर मास में किसी न किसी विद्यालय/महाविद्यालय में न गये, तो यह होने में कोई अतिशयोक्ति न होगी।

हमारे ऐतिहासिक महापुरुष भुला दिये जायेंगे, बलिदानी भुला दिये जायेंगे और काल्पनिक, तुष्टिकरणवादी मानसिकता से परिपूर्ण 'सेंटाक्लाज' हमारी पीढ़ियों के मन-मस्तिष्क को घेर कर बैठ जायेंगे। यह आर्यावर्त देश आज हजारों ऐसे षडयन्त्रों का शिकार हैं, जो नए-नए रूप धरकर हमारे भीतर स्थान बना रहे हैं। यदि हम जागरुक हैं, ज्ञानशील हैं, गमनशील हैं, प्राप्तिशील हैं तो हममें से एक-एक व्यक्ति अपने चारों ओर सावधान रहते हुए अपने-अपने सामर्थ्य से कुछ-कुछ निराकरण तो कर ही सकता है कोई घरों में, कोई परिवारों में, कोई विद्यालयों में, कोई महाविद्यालयों में और साथ ही हम स्थापित कर सकते हैं- 'पं. रामप्रसाद बिस्मिल' को, स्वामी श्रद्धानन्द को.....

-आचार्य हनुमत्प्रसाद

आर्य गुरुकुल महाविद्यालयों में आर्य प्रचारकों की कक्षाओं का विवरण

१. आर्य गुरुकुल महाविद्यालय, चित्तौड़ाझाल (दयानन्द ग्राम), मुजफ्फरनगर, उत्तर प्रदेश

संचालक- आचार्य संजीव जी

प्रथम सत्र की कक्षाएं- 1-2 अक्तूबर, 2016
15-16 अक्तूबर 2016
22-23 अक्तूबर 2016
27-28 नबम्बर 2016

दूसरे सत्र की कक्षा- 31 दिसम्बर 2016 व 1 जनवरी 2017

२. आर्य गुरुकुल महाविद्यालय, आर्ष गुरुकुल टटेसर-जौन्ती, दिल्ली-81

संचालक- आचार्य सतीश जी

प्रथम सत्र की कक्षाएं- 10-11 सितम्बर 2016
24-25 सितम्बर 2016
22-23 अक्तूबर 2016
17-18 दिसम्बर 2016

दूसरे सत्र की कक्षाएं- 05-06 नवम्बर 2016
31 दिसम्बर 2016 व 1 जनवरी 2017

३. आर्य गुरुकुल महाविद्यालय, आर्यसमाज शिवाजी कॉलोनी, रोहतक(हरियाणा-दक्षिणी आवर्त)

संचालक- आचार्य महेश जी

प्रथम सत्र की कक्षाएं- 10-11 सितम्बर 2016
24-25 सितम्बर 2016
08-09 अक्तूबर 2016

दूसरे सत्र की कक्षाएं- 05-06 नवम्बर 2016
19-20 नवम्बर 2016
31 दिसम्बर 2016 व 1 जनवरी 2017

४. आर्य गुरुकुल महाविद्यालय, आर्यसमाज मॉडल टाऊन, करनाल (हरियाणा-उत्तरी आवर्त)

संचालक- आचार्य धर्मपाल जी

प्रथम सत्र की कक्षाएं- 01-02 अक्तूबर 2016 (पानीपत)
15-16 अक्तूबर 2016 (करनाल)
22-23 अक्तूबर 2016 (कैथल)
10-11 दिसम्बर 2016 (कैथल)

दूसरे सत्र की कक्षाएं- 24-25 दिसम्बर 2016 (करनाल)
07-08 जनवरी 2017 (कैथल)

आगामी आर्य प्रशिक्षण सत्रों की सूचना

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा द्वारा आर्य विद्या देने हेतू द्विदिवसीय सत्रों का आयोजन प्रतिमाह अनेक स्थानों पर हो रहा है। सत्रों की जानकारी समय पर सभी को मिल सके इसके लिए आगामी सत्रों की सूचना, जो अब तक निश्चित हो चुके हैं, दी जा रही है। इसके अलावा भी कई सत्र जो बाद में निश्चित होते हैं उन की सूचना अन्य माध्यमों से आर्यों को भेज दी जाती है। सभी आर्यों से यह भी निवेदन है कि सत्रों की तिथियाँ समय पर निर्धारित कर अधिकारियों से अनुमति ले लेवें।

क्र.सं.		स्थान	दिनांक	सम्पर्कदूरभाष
1.	सैनी धर्मशाला, सफीदों बाईपास, जीन्द, हरियाणा	07-08 जनवरी	आर्य सुरेन्द्र, आर्य सन्दीप	7404346740,9812492102
2.	कृष्ण वाटिका, गोविन्दपुरी, मोदी नगर, गाजियाबाद (ऊ.प्र.)	21-22 जनवरी	आर्य विनोद	9045007844
3.	गुरुकुल ढांढ़ रोड़, फतेहपुर-पुंडरी, कैथल, हरियाणा	21-22 जनवरी	आर्य सुरेन्द्र, आर्य अमनदीप	9813817610,7876854056
4.	ओम् काम्पलेक्स, नजदीक तोशाम चुंगी, हिसार, हरियाणा (महिला सत्र)	11-12 फरवरी	आचार्य हरपाल	9467843826

वैदिक विचारधारा का महत्व

-आचार्य सतीश

आइये, सर्वप्रथम दो स्थितियों पर विचार करते हैं, एक तरफ कोई महानगर है, भीड़-भाड़ है, मनुष्य भाग-दौड़ में लगे हैं, एक-दूसरे को पछाड़ने में लगे हैं, जिविका के लिए, संसाधनों को इकठ्ठा करने के लिए व उनके भोग में लगे हुए हैं। कोई पूछता है तो कहते हैं कि क्या करें? जीविका का प्रश्न है! गुजारे का प्रश्न है! जीवन चलाने का प्रश्न है! प्रतिदिन की समस्याओं के समाधान का प्रश्न है! अर्थात् यह भौतिकवाद है-केवल वर्तमान, न कोई भूत का चिन्तन है न भविष्य का विचार है। वर्तमान को जीने व भोगने में लगे हुए हैं।

दूसरी और किसी तथाकथित धार्मिक नगरी के किसी आश्रम में सैकड़ों संन्यासी मस्त हैं, न कोई चिन्ता है, न कोई फ्रिक है। कहीं न कहीं से मिल जाता है, खा लेते हैं। कहते हैं कि हमें अपना परलोक सुधारना है, भक्ति करते हैं, हमें वर्तमान से क्या लेना है? जीवन मिला है वह तो कट ही जायेगा, क्यों न आगामी जीवन सुधारा जाये। हम आत्मा-परमात्मा का ही चिन्तन करते हैं, हमारा तो यही उद्देश्य है, यही लक्ष्य, यही जीवन का सार है अर्थात् यह आध्यात्मवाद है, केवल आगामी जीवन के बारे में सोचते हैं, वर्तमान की कोई चिन्ता नहीं है।

यही दो धाराएं मुख्य रूप से दुनियाँ भर में चलती हैं, चाहे कोई मत-संम्प्रदाय हो, कोई देश हो। हाँ, भौतिकवादियों व आध्यात्मवादियों की संख्या में अन्तर होता है जैसे पश्चिम में आध्यात्मवाद कमजोर, भौतिकवाद हावी है, तो भौतिकवादियों का बाहुल्य है। पूर्व में आध्यात्मवादियों बाहुल्य रहा है, उन्हीं की विचारधारा हावी रही है, धीरे-धीरे भौतिकवाद बढ़ रहा है।

एक तरफ कोरा आध्यात्मवाद है जो भौतिकवाद को हेय दृष्टि से देखता है, दूसरी तरफ भौतिकवाद, जो आध्यात्मवाद को कल्पना और अनावश्यक मानता है। एक केवल भविष्य का चिन्तन करता है, दूसरा केवल वर्तमान में रहता है। एक केवल प्रकृति व जड़ जगत के बारे में सोचता है, दूसरा केवल आत्मा-परमात्मा के बारे में विचार करता है। एक भौतिक संसार को कल्पना मानता है, दूसरा अभौतिक पदार्थों को कल्पना मानता है। एक केवल पाँच ज्ञानन्द्रियों तक प्रमाण मानता है, दूसरा इससे परे की अनुभूति को ही सत्य मानता है।

यह एक विकट समस्या है और अधिकांश व्यक्ति इनमें से किसी की सत्यता के विषय में निर्णय नहीं कर पाते, दोनों छोरों के बीच में झूलते रहते हैं और जीवन भर ऐसे ही व्यतीत हो जाता है अधिकांशत् न इधर जा पाते हैं न उधर, न किसी को पूर्णतया सत्य मान पाते हैं न पूर्णतया असत्य। और वास्तविकता भी यही है कि दोनों ही धाराएं एक दूसरे के विपरीत व वास्तविकताओं से परे जा चुकी हैं। इसीलिए कोई व्यक्ति न तो निर्णय कर पाता है और न किसी एक को पकड़कर पूर्णतया जीवन के लक्ष्य तक ही पहुँच पाता है।

तो इसका समाधान क्या है? क्या वैदिक सिद्धान्तों में इसका समाधान है। वैदिक संस्कृति में इनमें किस प्रकार से समन्वय है, जानने का प्रयास करते हैं।

वैदिक संस्कृति का दृष्टिकोण कोरा आध्यात्मिक दृष्टिकोण नहीं रहा अर्थात् ऐसा दृष्टिकोण जिसमें भौतिकता को हेयदृष्टि से देखा गया हो, उसकी पूर्णतया उपेक्षा की गई हो। वैदिक संस्कृति का दृष्टिकोण वैज्ञानिक दृष्टिकोण रहा है। वैदिक संस्कृति के विचारक भी वैज्ञानिकों की ही तरह जो दिखता है उसको भी सत्य मानकर चले थे। यह व्यवहारिक दृष्टिकोण है, इसी दृष्टिकोण से जीवन की समस्याओं पर सोचते थे। संसार सत्य है, यह लाखों करोड़ों वर्षों से अपनी विभूतियों के साथ चला आ रहा है- इसको मिथ्या कैसे मानें?

लेकिन व्यवहारिक दृष्टिकोण यह भी है कि यह संसार और इसके विषय अन्त तक टिकने वाले नहीं। आज जो है, वह आगे चलकर नहीं होगा। आज जो नहीं है वह आगे चलकर उपस्थित होगा। बहुत कुछ बदल जायेगा। आज जो वस्तु लुभाती है कल उससे विरक्ति हो जाएगी। यह भी व्यवहार से ही सिद्ध है कि शरीर के अतिरिक्त भी शरीर में चेतनता है, प्रकृति से परे संसार में भी चेतनता है। केवल संसार ही पूर्ण सत्य है- ऐसा नहीं है। इसके अतिरिक्त भी कुछ सत्य हैं- वही आध्यात्मवाद है। इसी का विश्लेषण आध्यात्म है। भौतिकवाद भी सत्य है, आध्यात्मवाद भी सत्य है। फिर केवल एक के सहारे लक्ष्य की प्राप्ति कैसे संभव है। यह भी व्यवहार में देखा जाता है कि केवल भौतिकवाद से भी अन्त तक आते-आते विरक्ति होने लगती है। अत: आध्यात्मवाद का सहारा लेना पड़ता है। अत: दोनों की आवश्यकता है। दोनों का समन्वय ही पूर्ण हितकर व लक्ष्य प्राप्ति के लिए आवश्यक है। और इन दोनों के समन्वय को ही विद्वानों ने भौतिक-अध्यात्मवाद कहा है। इसमें भौतिकवाद साधन है आध्यात्म को समझने का, उसे प्राप्त करने का। जैसे शरीर साधन है आत्मा के उत्थान का। प्रकृति साधन है परमात्मा की अभिव्यक्ति का।

भौतिकवादी विचारों की दृष्टि में उन्नत्ति का अर्थ प्रकृति पर विजय पाना है, आध्यात्मवादी के विचारों की दृष्टि में उन्नत्ति का अर्थ प्रकृति की नहीं, आत्मा की भी विजय पाना है। बैलगाड़ी के स्थान पर वायुयान, दीपक के स्थान पर बिजली का प्रकाश आदि, नई-नई मशीनों के माध्यम से मनुष्य प्रकृति का स्वामी बनता जा रहा है। लेकिन इनके सुख का लाभ उठाने के साथ-साथ काम, क्रोध, मोह, लोभ के वेगों के आगे परास्त हो दु:ख बढ़ाता जा रहा है। मोटर पर चढ़कर लूट-पाट करना, हवाई जहाज पर चढ़कर निहत्थों पर बम गिराना तभी रुक सकेगा जब अध्यात्म के द्वारा काम, क्रोध, लोभ, मोह के मनोवेगों पर मनुष्य नियंत्रण करना सीख जाए। भौतिक साधनों की उन्नत्ति का लाभ व उनसे निरन्तर सुख की प्राप्ति तभी सम्भव है जब अध्यात्मिक उन्नत्ति द्वारा आत्मा को पहचान लें, अपने वास्तविक स्वरूप को जान लें, शरीर के मोह जाल से निकल जाएं।

वैदिक संस्कृति में सब प्रकार की भौतिक समृद्धि की कामना की जाती रही है, सुख ऐश्वर्य के लिए संसार के, प्राकृतिक वैभव के लिए, दिल खोल कर प्रयत्न होता रहा है, तभी तो राष्ट्र उत्थान के लिए यजुर्वेद में जो प्रार्थना की गई है उसमें कहा गया है कि- राष्ट्र में तेजस्वी ब्राह्मण हों, शूरवीर क्षत्रिय हों, भरपूर दूध देने वाली गाय हों, भारी भार ढ़ोने वाले बैल हों, सरपट दौड़ने वाले घोड़े हों, अति बुद्धिमान देवियां हों, युवा वीर, विजयी और वैभवशाली पुत्र हों, जब चाहे वर्षा हो, वनस्पतियों से पके फल हों, सबका योगक्षेम हो, कल्याण हो, हम सबकी सब तरह की समृद्धि हो। भौतिक समृद्धि का ऐसा सपना था। साथ-साथ आत्मा पर विजय पाने का मार्ग था कि यम-नियमों की दस कसौटियों पर खरा उतरने पर आत्म तत्व विकास के मार्ग पर चल पड़ता है। इनकी साधना आत्मा की साधना है। इन पर चलना

शेष अगले पृष्ठ पर

पिछले पृष्ठ का शेष...

अध्यात्मवाद है, इनसे विपरीत चलना भौतिकवाद है। पांच यम और पांच नियमों को आधार बनाकर जिस व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के जीवन रूपी भवन का निर्माण होगा उसे कोई भूचाल भी गिरा नहीं सकता। व्यक्ति तथा समाज का जीवन इन्हीं में बन्धकर ठीक दिशा में चलता है। आध्यात्मवाद के लिए ये तत्व अटल सत्य हैं, भौतिकवाद भी तभी ठहर पाएगा अन्यथा तो वह मानव के विनाश का ही कारण बनता है।

भौतिकवाद व अध्यात्मवाद का समन्वय ही मानव के उत्थान का मूल है। वैदिक संस्कृति वैदिक विचारधारा ही ऐसी धारा है जो इन दानों को साधती है तथा मानव को सुख-समृद्धि व उत्थान के उच्च शिखर पर ले जाती है।

सूचना

॥ ओ३म् ॥

(प्रथम)

"सिद्धान्त संगोष्ठी"

१४-१५ जनवरी २०१७

स्थान:

आर्य गुरुकुल महाविद्यालय
चित्तौड़ झाल, मुजफ्फरनगर,उ०प्र०

आयोजक:

आर्य गुरुकुल महाविद्यालय

सहयोगी:

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा
केन्द्रीय संगठन

आर्य सिद्धान्त

तीर्थ कोई स्थान नहीं, वे कर्म हैं जिनसे व्यक्ति दु:ख से छूटता है जैसे विद्याग्रहण, ईश्वरोपासना, ब्रह्मचर्य, सत्संग, जितेन्द्रियता आदि।

Rishi Dayanand - His Life And Work
-His Early Life-

-Saroj A rya, Delhi

It is the Land of Saurashtra, the western part of India, that gave birth to the greatest reformer of our time. In the year 1825 A.D., in a village Tankara in the state of Morvi in Kathiawar (modern Gujrat), he was born in a Shaivite Family, one who in later life was destined to lead a great spiritual, social and nationalist movement and to rank as one of the makers of modern India. His Father Amba Shankar or Karsanji Tiwari held the position of a Jamadar, or revenue collector and, beside this, did some banking and money lending business. He was a stern, austere man, a devout worshiper of Lord Shiva, orthodox and uncompromising in his views. Strict in the performance of his religious duties he could not tolerate the slightest departure from the observances enjoined by his faith.

When Mool Shankar (the original name of Dayanand) was five years of age, his education began in according to the tradition of his family. His first teacher was his father. He was taught the Devanagri alphabet and made to learn by rote some select mantras and Shalokas. In his eighth year he was adorned with Yajnopavit (a sacred thread weared around neck and right underarm, which is a symbol of learned weared before starting of sacred scriptures) and the young boy was formally initiated into the study of the Yajurveda (one of the four Vedas) and began his career as a Brahman. A devotee of Shiva as his father was, he was eager, that his son should follow in his foot-steps and grow up to be a thorough Shaivite. He, therefore, took his son to Shaiva festivals and meetings, and places where stories from Shiva Purana (a book about mythological character Lord Shiva) were recited. He would sometimes force him to observe fasts to propitiate Shiva. But Mool Shankar was very intelligent and his interest was in learning rather than performing various tasks in the name of religion. Mool Shankars's mother (Amrita Ba) protests were of no use against these observances which, she said, were affecting the health of the young boy. Thus several years passed by. When Mool Shankar had attained the age of fourteen, he know by heart, the whole of the Yajurveda (one of four Vedas), some parts of the other three Vedas and some works on Sanskrit grammar.

The Shivaratri, the sacred day and most important festival of the Shaivas came round. This day they observe fast and pray for whole night in the temple. Now that Mool Shankar was fourteen, his father did not see any reason why he should not do it. The mother protested, as usual, but Karsan Tiwari was not to be easily dissuaded. The fast had to be kept.

To be continue...

आर्य प्रचारक-आवश्यकता व तैयारी

-आचार्य सतीश

सवा अरब की जनसंख्या वाले इस राष्ट्र को आर्यावर्त्त बनाने के संकल्प का आर्यगण प्रतिदिन जय आर्यावर्त्त का उद्घोष लगाकर दोहराते हैं। यह निश्चित है कि जिस आर्यावर्त्त के स्वप्न को ऋषि दयानन्द ने देखा था, उसको ठीक-ठीक समझकर उसके लिए अनेक ऋषि अनुयायियों ने प्रयास भी किए हैं। हालांकि अनेक ऋषि भक्त ऐसे भी हैं जो आर्यावर्त्त के ऋषि के स्वप्न का ठीक से आकलन नहीं कर पाये और भारत तथा आर्यावर्त्त के अन्तर को ही नहीं समझते हैं, यह भी सत्य है कि इस अन्तर को न समझ पाने के कारण वे पुरुषार्थ तो करते हैं लेकिन उद्देश्य स्पष्ट न होने के कारण उसका उतना लाभ नहीं हो पाता।

जब ऋषि का लक्ष्य इस राष्ट्र को आर्यावर्त्त बनाना था तो लक्ष्य हमारा भी यही होना चाहिए और आज हजारों युवक इस लक्ष्य को स्पष्टता से समझते भी हैं और इसके लिए प्रयासरत भी हैं। आर्यावर्त्त से पहले हम जय आर्य का उद्घोष भी करते हैं अर्थात् आर्यों के द्वारा ही आर्यावर्त्त बनाया जा सकता है। और इतने विशाल राष्ट्र को आर्यावर्त्त बनाने के लिए उतनी ही विशाल संख्या आर्यों की भी होनी चाहिए। निर्माण की प्रक्रिया भी यही है- व्यक्ति, परिवार, समाज व राष्ट्र अर्थात् पहले व्यक्ति आर्य बने, फिर परिवार आर्य बने तब समाज का आर्यीकरण हो, तभी राष्ट्र आर्यावर्त्त बन सकता है। समाज को ही आर्य बनाना होगा, राष्ट्र को ही आर्य बनाना होगा, केवल कुछ लोगों को मिलाकर आर्य समाज समूह बना देने से ही काम नहीं चलेगा।

व्यक्ति और परिवार के आर्य बनाने का कार्य तो निरन्तर चल ही रहा है और उसको भी और अधिक गति से चलाने की आवश्यकता है। आर्यों व आर्य परिवारों को और अधिक सक्षमता तथा समाज के आर्यीकरण की और हम बढ़ सकें उसके लिए आवश्यकता है ऐसे आर्य प्रचारकों की जो सिद्धान्तों से युक्त हों, दृढ़ हो, समाज का ही अंग हों, समाज में ही घुल मिलकर रहते हों, जिनकी जीविका प्रचार पर निर्भर न हो और जो आर्यावर्त्त के लक्ष्य के प्रति समर्पित हों और उसे ठीक-ठीक समझते भी हों। और ये आर्य प्रचारक संगठित हों, एक दिशा में व एक लक्ष्य के साथ कार्य करने वाले हों।

ऐसे ही आर्य प्रचारकों को तैयार करने का कार्य राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा के द्वारा आचार्य गुरुकुल महाविद्यालय चित्तौड़ाझाल के अर्न्तगत चल रहा है। यह प्रचाारकों के निर्माण की प्रक्रिया भी सतत् चलने वाली प्रक्रिया है, आर्य बनते रहेंगे, वही अपनी विद्या व बढ़ाकर आर्य प्रचारक बनते रहेंगे और यह एक अवनरत प्रक्रिया का रूप ले लेगी। इसके लिए वर्तमान में चार स्थानों पर आर्य गुरुकुल महाविद्यालय स्थापित किए गये हैं जो इस प्रकार है:-

१. आर्य गुरुकुल महाविद्यालय चित्तौड़ाझाल मुजफ्फरनगर, संचालक- आचार्य संजीव जी

२. आर्य गुरुकुल महाविद्यालय, आर्ष गुरुकुल टटेसर जौन्ती, दिल्ली। संचालक- आचार्य सतीश जी

३. आर्य गुरुकुल महाविद्यालय, आर्यसमाज शिवाजी कॉलोनी, रोहतक। संचालक- आचार्य महेश जी

४. आर्य गुरुकुल महाविद्यालय, आर्य समाज मॉडल टाऊन, करनाल, संचालक- आचार्य धर्मपाल जी

इन सभी केन्द्रों पर कक्षाएं चल रही हैं जहाँ लगभग 800 आर्यों का पंजीकरण है। आर्य प्रचारक विद्या व सिद्धान्त ग्रहण कर रहे हैं। कलियुगाब्द 5117 के अन्त तक लगभग 400 आर्य प्रचारक अपना पाठ्यक्रम पूरा कर कार्यक्षेत्र में होंगे व अगले वर्ष के लिए आर्य प्रचारकों का पंजीकरण शीघ्र शूरू कर दिया जाएगा। आर्याओं के लिए भी आर्य प्रचारिका का कार्य शीघ्र ही प्रारम्भ हो रहा है।

आर्यों व आर्याओं समाज का आर्यीकरण करना व आर्य तथा आर्य परिवारों को सशक्त बनाना हम सबका लक्ष्य होना चाहिए और यह हम तभी कर पाएंगें जब अधिक से अधिक संख्या में आर्य प्रचारक होंगे और न केवल अपने क्षेत्र में अपितु दूर-दूराज के क्षेत्रों में जाकर भी प्रचार न निर्माण कार्य को करने में सक्षम होंगे। तो आइए हम सब बढ़ें अपने लक्ष्य की ओर दृढ़ता व निश्चित गति के साथ!

आर्य सज्जनों !

सादर नमस्ते ।

व्यक्ति ,समाज एवं राष्ट्र के निर्माण तथा उन्नयन के लिये सिद्धान्तों का स्पष्ट परिज्ञान आवश्यक है । अनुकरण एवं प्रसार में उन्हीं सिद्धान्तों को सुभीता होती है जो संशय रहित होते हैं । इसलिये विद्वानों को समय-समय पर एकत्रित होकर सत्य सिद्धान्तों की सुस्पष्ट व्याख्या करनी चाहिये , कालखण्ड में मिश्रित हो गये असत्य सिद्धान्तों को दूर करना चाहिये। देश , काल और परिस्थितियों में उसे किस तरह लागू करवाया जाय इस पर भी विचार करके नीति बनानी चाहिये । जिससे साधारण जन सरलता से अंगीकृत कर धारण कर सके । इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु " आर्य गुरुकुल महाविद्यालय " प्रचारकों , उपदेशकों , पुरोहितों एवं आचार्यों के निर्माण के साथ-साथ सिद्धान्त संगोष्ठियों का महा प्रकल्प भी प्रारम्भ करने जा रही है । पहली सिद्धान्त संगोष्ठी 14 -15 जनवरी 2017 को गुरुकुल महाविद्यालय , चित्तौड़ाझाल, मुजफ्फरनगर, उ०प्र० में है । सभा इसके लिये गुरुकुल महाविद्यालय के संचालकों एवं पदाधिकारियों का अभिनन्दन करती है और हर तरह के सहयोग के लिये आश्वासन देती है और आर्यों से भी यही उम्मीद करती है।

आचार्य जितेन्द्र आर्य ,
महासचिव ,
राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा।

www.aryanirmatrisabha.com

संध्या काल

माघ मास, शिशिर ऋतु, कलि-5117, वि. 2073
(13 जनवरी 2017 से 10 फरवरी 2017)
प्रातः कालः 6 बजकर 00 मिनट से (6.00 A.M.)
सांय कालः 6 बजकर 15 मिनट से (6.15 P.M.)

फाल्गुन मास, वसंत ऋतु, कलि-5117, वि. 2073
(11 फरवरी 2017 से 12 मार्च 2017)
प्रातः कालः 5 बजकर 30 मिनट से (5.30 A.M.)
सांय कालः 6 बजकर 30 मिनट से (6.30 P.M.)

दिनांक 25 दिसम्बर दिन रविवार को आर्य केन्द्रीय सभा ने राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा और राष्ट्रीय आर्य क्षत्रिय सभा के साथ मिलकर महानगर गाजियाबाद में अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द का बलिदान दिवस मनाया।

इस कार्यक्रम में राष्ट्रीय आर्य क्षत्रिय सभा और आर्य केन्द्रीय सभा ने पहले पूरे गाजियाबाद नगर में एक भव्य रैली निकाली ताकि सर्वसमाज को आर्यसमाज के होने का आभास हो सके।

तत्पश्चात गुरुकुल में मंच संचालन आचार्य योगेश जी (अध्यक्ष उ. प्र. रा.आ.क्ष.स.) ने किया तथा मुख्य वक्ता श्रद्धेय आचार्य परमदेव जी मीमांसक रहे। जिन्होंने स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा किये शुद्धि आंदोलन पर सर्वसमाज को झकझोड़ कर रख दिया। उन्होंने स्वामी श्रद्धानन्द की वीरता और बलिदान को सफल करने के लिए निर्देश दिये ताकि हम भी उनकी भाँति समाज में कार्य करें और उनके अधूरे कार्यों अर्थात् आर्य निर्माण को गति दें। सभी आर्य समाजों को आचार्य जी ने एक होकर कार्य करने को कहा।

मुख्य अतिथि आचार्य हनुमत प्रसाद जी, आर्य बालेश्वर पंवार जी (अध्यक्ष रा.आ.क्ष.स.) आर्य चरण जी (सचिव रा.आ.क्ष.स.) आर्य केंद्रीय सभा गाजियाबाद के मंत्री आर्य योगेश जी, माया प्रकाश आर्य जी आदि रहे। राष्ट्रीय आर्य क्षत्रिय सभा ने सुरक्षा के कार्य को सम्भाला।

-दिनेश आर्य (सूचना सचिव) राष्ट्रीय आर्य क्षत्रिय सभा (उ. प्र.)

13 जनवरी-10 फरवरी-2017 **माघ** ऋतु- शिशिर

सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार	रविवार
सुभाष जयन्ती 23 जनवरी				पुष्य कृष्ण प्रतिपदा 13 जनवरी	आश्लेषा कृष्ण द्वितीया 14 जनवरी	मघा कृष्ण तृतीया 15 जनवरी
पू॰ फाल्गुनी कृष्ण चतुर्थी 16 जनवरी	उ॰ फाल्गुनी कृष्ण पंचमी 17 जनवरी	हस्त कृष्ण षष्ठी 18 दिसम्बर	चित्रा कृष्ण सप्तमी 19 जनवरी	स्वाती कृष्ण अष्टमी 20 जनवरी	स्वाती कृष्ण नवमी 21 जनवरी	विशाखा कृष्ण दशमी 22 जनवरी
अनुराधा कृष्ण एकादशी 23 जनवरी	ज्येष्ठा कृष्ण द्वादशी 24 जनवरी	मूल कृष्ण त्रयोदशी 25 जनवरी	पूर्वाषाढ़ा कृष्ण चतुर्दशी 26 जनवरी	उत्तराषाढ़ा कृष्ण अमावस्या 27 जनवरी	श्रवण शुक्ल प्रतिपदा 28 जनवरी	धनिष्ठा शुक्ल द्वितीया 29 जनवरी
शतभिषा शुक्ल तृतीया 30 जनवरी	पूर्वाभाद्रपदा शुक्ल चतुर्थी 31 जनवरी	उत्तराभाद्रपदा शुक्ल पंचमी 1 फरवरी	रेवती शुक्ल षष्ठी 2 फरवरी	अश्विनी शुक्ल सप्तमी 3 फरवरी	भरणी शुक्ल अष्टमी 4 फरवरी	कृतिका शुक्ल नवमी 5 फरवरी
रोहिणी शुक्ल दशमी 6 फरवरी	मृगशिरा शुक्ल एकादशी 7 फरवरी	आर्द्रा शुक्ल द्वादशी 8 फरवरी	पुनर्वसु शुक्ल त्रयोदशी 9 फरवरी	पुष्य शुक्ल चतुर्दशी/पूर्णिमा 10 फरवरी		

माघ मास का तिथि पत्र

आओ यज्ञ करें!

पूर्णिमा	12 जनवरी	दिन-गुरुवार	मास-पौष	ऋतु-शिशिर	नक्षत्र-रोहिणी
अमावस्या	27 जनवरी	दिन-शुक्रवार	मास-माघ	ऋतु-शिशिर	नक्षत्र-उत्तराषाढ़ा
पूर्णिमा	10 फरवरी	दिन-शुक्रवार	मास-माघ	ऋतु-शिशिर	नक्षत्र-पुष्य
अमावस्या	26 फरवरी	दिन-रविवार	मास-फाल्गुन	ऋतु-वसंत	नक्षत्र-शतभिषा

द्विदिवसीय आर्य/आर्या प्रशिक्षण के बाद सत्रार्थियों के अनुभव

सत्र का अनुभव बहुत अच्छा रहा, हमें आचार्य अशोक पाल जी ने बहुत अच्छा ज्ञान बताया जो आज तक हमें नहीं पता था। उन्होंने जो बताया वो सब बातें हमें आर्यावर्त बनाती हैं और हमारे देश के लिए व समाज में एक अच्छा वातावरण देश भक्ति के लिए प्रेरित करता है। हम आर्य बनकर अपना ही नहीं अपितु समाज व देश को बदल सकते हैं। और अपने देश को बचा सकते हैं। आचार्य अशोक पाल जी में एक अच्छे व्यक्ति की भावना उत्पन्न होती है। उनकी छवी भगत सिंह की छवी जैसी लगती है। उनके हम साथ रहकर उनके मार्ग दर्शन पर चलकर आर्यावर्त्त भारत का निर्माण करें।

अभी तो में केवल अपने आप को और परिवार को व अपने गांव को व समाज को सुधारूंगा। फिर जब मैं सभी ये कार्य करूंगा तो राजनीति में आकर आर्य समाज को आगे बढ़ाऊगा।

नाम : रजनीश कुमार, योग्यता : एल. एल. बी, वर्तमान : छात्र,
पता : गांव चमरावल, बागपत, उत्तर प्रदेश

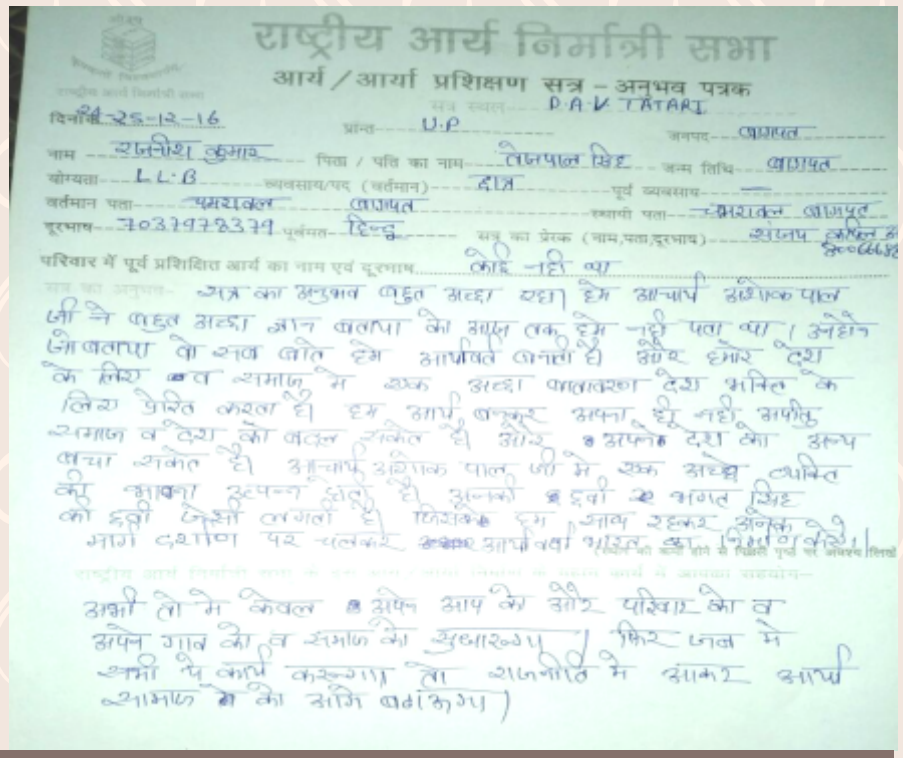

श्रीमान आचार्य अशोकपाल जी ने सत्र में हमें अनेकों बातों का ज्ञान दिया तथा उन्होंने हमें हमारे जीवन की व्याख्या बताई और दो दिनों में दिनाँक 24/12/2016 से 25/12/2016 तक हमें देश के बारे में तथा समाज के बारे में जानकारी दी। और हमें एक अच्छी प्रेरणा मिलती है कि हमें सत्य के रास्ते पर चलना चाहिए और बुराईयों का विनाश करना चाहिए। मैं उनके चरणों में शत्-शत् नमन करता हूँ। धन्यवाद!

मैं न केवल अपने आप को तथा अपने परिवार को अच्छे मार्ग पर चलने तथा गांव व आस-पास के व्यक्तियों के मन में आर्य की भावना को जगाऊंगा और अच्छे मार्ग पर चलूंगा।

नाम : शिवम मित्तल, आयु : 20 वर्ष, योग्यता : एल. एल. बी
पता : चमरावल, बागपत, उत्तर प्रदेश

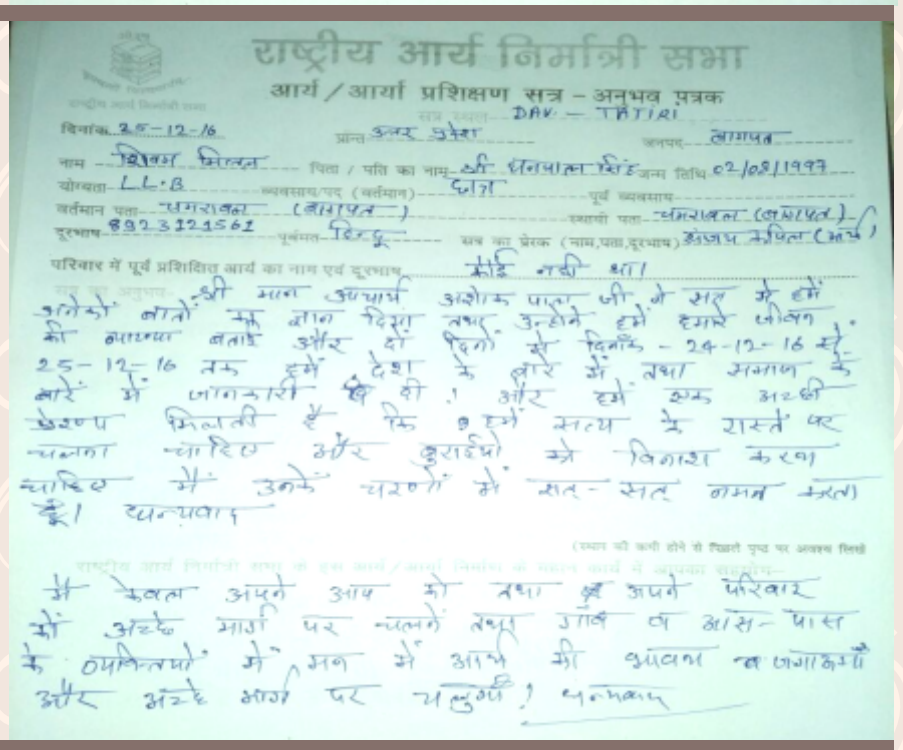

मैंने इस सत्र से काफी महत्वपूर्ण विषयों के बारे में सूक्ष्म रूप से जाना। इस सत्र से पहले मुझे जो जानकारी थी वो सुनी हुई थी, परन्तु तथ्य आधारित नहीं थी। इस सत्र से मुझे काफी प्रेरणा मिली और सत्यार्थ प्रकाश के अध्ययन के लिए प्रेरित किया मेरी सत्र के दौरान लगातार इच्छा रही कि मैं जल्दी से सत्यार्थ प्रकाश खरीदकर लाऊँगा और सत्यार्थ प्रकाश को निश्चित पढ़ूंगा, जिससे मुझे जो ज्ञान हुआ है वो अच्छे तरीके से हो। मुझे इस सत्र से नया उत्साह मिला है।

मैं इस सत्र से प्रेरित हुआ और मैं कोशिश करूंगा कि से सत्र लगातार एक समय अवधि में होते रहें, जिससे मैं कोशिश करूंगा कि ज्यादा से ज्यादा लोगों को प्रेरित करके इस सच्चाई से अवगत करा सकूं।

नाम : कृष्ण कुमार, आयु : 31 वर्ष, योग्यता : बाहरवीं
पता : गांव गुडियानी तह. कोसली, रेवाड़ी, हरियाणा

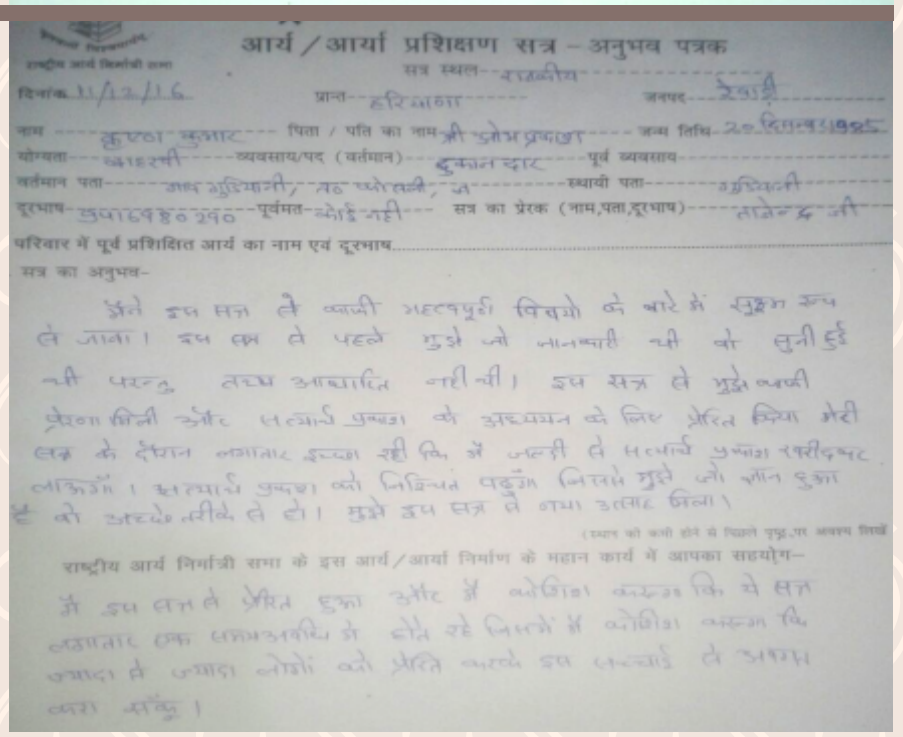

आर्य सिद्धान्तः पुण्य अर्थात् विद्या, बल व धन प्राप्त करना, करवाना व देना जिससे सत्याचरण, न्याय की स्थापना व भूख-प्यास आदि कष्ट दूर हो सकें।

आर्य निर्माणशाला में आर्य निर्माण

आर्य गुरुकुल महाविद्यालयों में आर्य प्रचारक कक्षाएं